खेल खेलबो स्वस्थ्य रहबो

सुरेखा नवरत्न

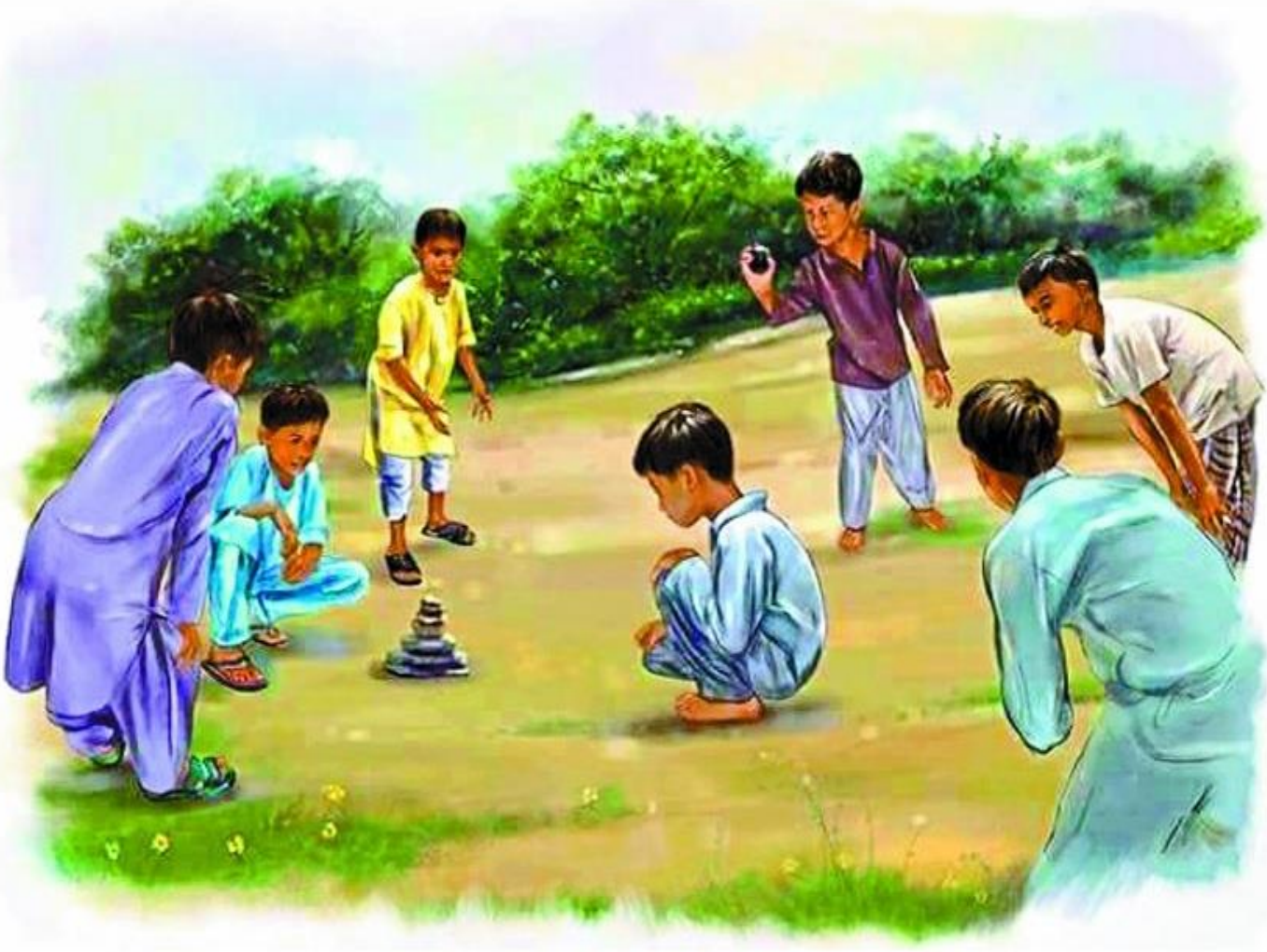

आलोक प्रकाशन

खेल खेलबो स्वस्थ रहबो

(खेलगढ़िया हमर छत्तीसगढ़िया ल साकार करबो)

C-2021 सुरेखा नवरत्न

आलोक प्रकाशन

संगवारी मन ल

जय जोहार

मोर नान्हे - नान्हे मयारू लईका मन ल, अऊ शिक्षक, पाठक संगवारी मन ल बतावत अब्बड़ सुख लागत हवय कि ए बेरा मैहा फेर आदरणीय आलोक प्रकाशन के माध्यम ले , हमर माटी के भाखा छत्तीसगढ़ी म, हमन के छत्तीसगढ़िया पुरखौती खेल मन के सुग्घर जानकारी लाने हंव | नान्हे संगवारी हो, मनखे मनके जिनगी म खेल के अब्बड़ महत्तम रईथे | खेल ह हमन के तन, मन अऊ जीवन ल सुग्घर बनाथे | हमन बड़ भागमानी आय अन, कि हमन छत्तीसगढ़ महतारी के कोरा म जनम लेहन | हमर छत्तीसगढ़ के पुरखौती, संस्कृति, तिहार-बार, गीतगोविन्द, खेलकूद अब्बड़ निराला हे | जेन खेलकूद ल खेल के हमन बाढ़े , उपजे हन, कई ठन ल तुहुच मन खेलत होहा| फेर आजकाल के मशीन के जुग म बहुत अकन खेल मन नदावत हे, बिसरावत हे |

संगवारी हो हमन ल हमर पुरखौती खेल मन ल बिसराना नई ये, भलुकन नवा पीढ़ी मन ल सिखोना हे | खेले कूदे ले तन-मन दुनो स्वस्थ रईथे, त चलव जानबो हमर गंवई के सुग्घर खेल मन के बारे म...

_ सुरेखा नवरत्न

खेल के महत्ता

नान्हे संगवारी हो, खेला के हमर जिनगी म अब्बड़ महत्ता हवय |खेला ले हमर मनोरंजन, अऊ टेम पास तो होबे करथे, संगे संग खेले कूदे ले हाथ गोड़ घलो पसुर होथे | आलस ह भागथे,अऊ शरीर घलो ह सुवस्थ रहथे | खेल म हमन ल नवा पहिचान मिलथे, पैसा कौड़ी घलो मिलथे अऊ सरकार के तरफ ले आनी बानी के ईनाम , तमगा घलो मिलथे | खेलाड़ी मन के देश बिदेश घलो म अब्बड़ नाम होथे | आजकल के दिन म बहुत अकन नवा नवा मशीन अऊ मनोरंजन के साधन आ घले हे | टी. वी., रेडवा, मोबईल फोन, बिडियो गेम अऊ आनी बानी के जिनीस | जेकर कारन लोग लईका मन गली खोल म खेलई ल भुलावत जाथें | अऊ हमर अब्बड़ अकन छत्तीसगढ़िया खेला मन नदावत हे |

मैं ए नई कहतव की ए मन म मत भुलावव, एमन के आय ले तो अऊ हमन के गियान म दस गुना बढ़ोतरी होय हवय | एकर ले तो हमर नान नान लईका मन अब्बड़ ओस्ताज हो घले हें | फेर लईका हो एकर संगे संग खेलई कूदई घलो ल बरोबर करत रहव | अऊ हमर छत्तीसगढ़िया खेलगढ़िया के नाव ल रोशन करत रहव |

अनुक्रमणिका

1.घरघुंदिया..... 7-8

2.फुगड़ी.... 9-10

3.अटकन- बटकन... 11-13

4. ईब्भा-डांड़ (गुल्ली डंडा)..... 14-15

5. बीस- अमृत..... .16-17

6. अट्ठी (गोटी) 18-19

7. चिंगरी- **भुसभुसी**... 20-21

8.**फल्ली**... 22-23

9.. **खटिया पाटी**... 24

10. बित्ता कूद.....25-26

11.. कबड्डी... 27-28

12. बांटी (कंचा)..... . 29-31

13. भौंरा... 32-33

14. कितकिता(बिल्लस)..... 34-35

15. सातुल(पिट्टूल)..... .. 36-37

16. नदी- पहाड़... 38-39

17. डंडा- पचरंगा... 40-41

18.टोपा- बंधऊल... 42-43

19. तीड़ीपासा..... . .. 44-46

20. रेसटीप... 47-48

21. रंग- बिरंगा.... 49

22. घोर- घोर रानी.....50-51

23. तोता उड़ मैना उड़... 52-53

24. दस्सो- पिंजो... 54-55

25. कुढ़ील... 56-57

26. आम्बे- बाम्बे... 58

27. चुरी जीत..... .. 59

28. चुरमुंदरी... 60-61

29. चालगोटी (कसाड़ी) 62-63

30. दही मही.... 64-65

31. परिचय और चित्र.. 66-67

1.घरघुंदिया

घरघुंदिया ल जादा नोनी लईका मन खेलथे, दर्रा-धूर्रा ल सकेल के चारो मुड़ा म सुग्घर पार बनाथे ।घर असन डिजईन बनाथे, रंधनी कुरिया, बड़े कुरिया, छोटे कुरिया, परछी, गरूआ कोठा बनाय रथें ।रंधनी कुरिया म माटी के थारी-बटकी, अऊ रंग- रंग के बरतन -भंडवा चुल्हा

चंकी बनाय रथे | पड़ोस म एको दू झन अऊ लईका मन घलो ओसने घरघुंदिया बनाय रथे, जैसे – बड़े मन असल जिनगी म काम बुता करथे, लईका मन ओसने ठगे- ठग के नकल मारथे |माटी के नहितो चेंदरी- गोंदरी के पुतरा-पुतरी घलो बनाय रथें |अऊ बढ़िया मजा के खेलत रईथें |

2. फुगड़ी

फुगड़ी ल जादातर नोनी लईका मन खेलथे | चार, छै, आठ, दस कतको झन हो जाय, ए खेल म कुछु समान के जरूरत नी परय | नोनी मन भुईयां म ऊखरू बईठ के दूनों गोड़ई ल पारी के पारी आघू-पाछू घसलाथें | लगातार

गोड़ ल चलावत रथें | जेन लईका ह गोड़ चलावत-चलावत हंफर के थक जाथे, अऊ रूक जाथे ओहा हार जाथे | अऊ सबले जादा बेरा तक टिके रईथे, ओहा जीत जाथे |

3.अटकन बटकन

ए खेला म छोटे- छोटे लईका मन, अंगना,परछी नईतो चौरा घलो म गोलिया बना के बईठ जाथें |अऊ अपन हथेरी ल भुईयां म रख देथे , एक लईका ह अघुवा बन के अपन जेवनी

हाथ के अंगठी ले पारी के पारी गाना गा- गा के छुथे |

अटकन- बटकन ,

दही- चटाकन

लऊहा- लाटा बन के कांटा

तुहर- तुहर पानी जावय,

सावन म करेला फुटय.

चल- चल बेटी गंगा जाबो

गंगा ले गोदावरी जाबो

पक्का-पक्का आमा खाबो

आमा के डार टुटगे

पठान टूरा जुझगे

आस लाम कांटा

गुलाम सिंग राजा...

गीत ह जेकर हाथ म आखिरी सिराथे , ओहा अपन हथेरी ल सीधा लहुटा लेथे |पारी के पारी सबो के हंथेरी सीधा होत जाथे ,त एक दूसर के कान ल धरथे अऊ गाना घलो गाथे ...

तिरी- मिरी मेंकरा के झाला
कौवा गावय आल्हा... घर म ननकी लईका मन ल ए खेल अऊ गाना ह अब्बड़ सुहाथे |

4.ईभ्भा डांड़ (गुल्ली डंडा)

एहा हमर गंवई के लईका मन के सबले पसंदीदा खेल आय | ए खेल ल दू झन ले, लेके पांच छै झन लईका मन घलो खेल सकत रथे | एक ठन लकरी के डंडा अऊ छोटे लकरी ल बढ़िया छोलके चोखी ईभ्भा

बनाय रथे | भुईयां म एक ठन गोला बनाय रथे, तेकर बीच म ईभ्भा ल मढ़ाके मारथे | जेकर ह थोरहे धूरिहा म जाथे तेकर दाम होथे | पारी के पारी मारते जाथे, अऊ जेन जगा ईभ्भा ह जाय रथे ओई जगा ले, दाम रथे तेहा निशाना लगाके टूकत रथे |

5.बीस अमृत (पत्थर -परी)

ए खेल म चार झन से लेके दस बारा लईका घलो मन खेल सकत रथे |सब एती ओती भागत रथे अऊ जेन लईका के माथ रईथे ते हा ओमन छू के बीस कईथे , बीस कहते ही ओहा एक जगा खड़े हो जाथे | आने लईका मन ओला अमृत देहे बर आथे, त

जेकर माथ रईथे तेहा छुए के कोशिश करथे | अमृत कहे के बाद फेर भागे लागथे |अऊ अमृत कहे के बेरा छू लेथे त ओकर माथ हो जाथे|असनेच पत्थर परी घलो ह रईथे, एमा बीस के जगा में पत्थर अऊ अमृत के जगा म परी कईथे |

6.अट्ठी (गोटी)

ए खेल म जादातर नोनी लईका मन खेलथें, अब्बड़ अकन गोटकर्रा ल बिन के ले आनथे अऊ बगरा

देथे|दू ठन टीम बनाथे, जोही वाला या एक एक झन घलो खेल सकत रथे |पारी के पारी एक हाथ नितो दूनो हाथ म,एक गोटी ल ऊपर फेंक के,एक गोटी ल बिन बिन के उठाते जाथे अऊ ऊपर फेके गोटी ल झट ले झोंक लेथे |गोटी ल झोंके नी पावय या हिल जाथे त आने लईका के पारी आ जाथे |असनेच करके जेन ह जादा गोटी सकेलथे , तेन ह कम पाय रथे तेला उधारी देथे|मंझनियां के बेरा लईका मन ए खेल ल दिन भर बइठे बईठे खेल देथें |गोटा के एक ठन अऊ तरीका म केवल पांच गोटी रईथे अऊ एमा एकहथ्थूल, दूहथ्थूल, अऊ कई परकार के खेले जाथे|

7.चिंगरी भुसभुसी

ए खेल म आठ, दस ,बीस कतको झन लईका खेल सकथे | दू ठन दल बनाय रथे,अऊ दूनो म एक- एक झन राजा रईथे | राजा मन अपन- अपन परजा मन के नवा- नवा नाम रखे रखथे |एक दल के राजा ह दूसर दल म बुले जाथे अऊ एक झन के आंखी ल अपन दूनों हथेरी से बंद कर देथे, अपन दल के एक लईका ल बदले हुए नाव लेके बलाथे | ओ लईका आके जेकर आंखी मुंदाय रथे तेला धीरे से कोथ देथे नईतो चुट ले मारके भाग जाथे अऊ अपन जगा म जाके बईठ जाथे | सब झन मिलके गाना गाथे-

" चिंगरी भुसभुसी, मानमती के दाई
तोर ददा खावय मुर्रा, तोर दाई खावय लाई" |

कईके गाना गावत रथे |ओई म मारे कोथे आय रथे तेन बच्चा ल चिन्हे जाथे, चिन्हारी पा जाथे त ठीक नीतो , दुसर पार्टी म शामिल हो जाथे|

8.फल्ली डांड

ए खेल म पांच संगी रईथे | अऊ लकीर खींच के चार ठन बड़े- बड़े चरकोनिया घर (खाना) बनाय रथे | जेन संगी के माथ (दाम) रथे,

ओहा बीच म चार ठन खपरैल के टुकड़ा या पथरा के टुकड़ा के रखवार रईथे | खेलईया संगी मन ओ खपरैल मन ल हेरे के उदीम करथे, हेरत घानी जेकर माथ रथे तेहा छू डालते त ओकर दाम हो जाथे, अगर नई छू पावय त, खपरैल ल चारो संगी, एक एक ठन लेके, एक ठन खाना म एकट्ठा हो जाथे अऊ जोर से फल्ली कईके चिल्लाथे|

9.खटिया पाटी

ए खेल म घलो पांच लईका रईथे, हमन स्कूल म पढ़त रहन त अब्बड़ खेलन| एक ठन कमरा के चारो कोन्टा ल एक एक झन पोगरा लेथे | जेकर माथ रथे ओहा बीच म रथे, ए कोन्टा ले ओ कोंटा एकर जगा ले ओकर जगा जाय के कोशिश करथे|ओई बीच म अगर माथ देय वाला संगी ह आने के कोन्टा म जाय बर ताकत रईथे |अगर चल देथे त नई जाय पावय ते संगी के नावा माथ हो जाथे|

10. बित्ता कूद

ए खेल ह ऊंचा कूद असन आय, एमा एक झन संगी ह भुईयां म गोड़ लमा के बईठे रथे,

अऊ अपन दूनों हाथ के बित्ता ले दूनों गोड़ ल संटाके ऊंचा बनाय रथे | आने संगी मन ओकरे ऊपर ले कूदत जाथे | कूद दारथे त अऊ ऊंचा ल बढ़ाय जाथे, जेकर गोड़ ह बित्ता के ऊंचाई ल छुवा जाथे ओहा हार जाथे |

11. कबड्डी (हू-तू-तू)

ए खेला ल लईका सियान,नोनी- बाबू सब झन खेलथे | एहू म दू ठन दल रईथे, एक दल के एक खेलाड़ी ह दूसर दल म कबड्डी – कबड्डी कहत कहत जाथे अऊ ओमन ल छूए के परयास करथे | दूसर

दल मन धरे के परयास करथे | एतके बखत लंबा साहस लेना रईथे, साहस टूटना नई रहय, साहस टूटथे तेहा मर (फऊ) जाथे|अऊ ओमन ल छू के बीच लकीर तक बिना साहस टूटे वापिस आ जाथे तेहा ,जीत जाथे | असनेच करके खेलाड़ी मन फऊ होवत जाथे,त पाली के हार जीत होवत जाथे |अऊ ए हा मनखे मन के अब्बड़ पसंद के खेला ए |पूरा देश घलो म एला खेलथे |

12.बांटी (कंचा)

बांटी के खेला ल कई परकार के खेले जाथे |
कई झन संगवारी मन मिलके बांटी खेलथे,
एमा भुईयां म छोटकन गुच्ची खनथे |
अऊ ओकर थोरकन दूरिहा म लकीर

खींचे रईथे | लकीर मेर खड़े होके , पारी के पारी जम्मो संगी अपन –अपन बांटी ल ढूलो -ढूलो के गुच्ची म डारे के कोशिश करथे | जेकर ह गुच्ची म पहुँचथे तेहा पहला, लकठा वाला , दूसरा, तीसरा, चौथा हो जाथे | अब खेला शुरू करथे, दूदी , चार-चार जतको मन लागय सबके मरजी ले बांटी सकेल के एक संग ढूलोथे, फेर कोनो एक बांटी ल निशाना लगाके टूकना रईथे | अगर कहे रथे ओईच म निशाना लग जाथे त सब ल जीत जाथे, अऊ नई परय त हार जाथे | अगले दाम

के लिए फेर बांटी के जुर्माना भरके खेलना परथे |

दूसर तरह के खेल म, एक ठन गोला के भीतरी म बांटी मन ल रखे जाथे अऊ, संगी मन के बताय बांटी म अपन हाथ के बीच अंगठी से बांटी म निशाना लगाना रईथे | बताय हुए बांटी ल लग जाथे त खेलईया लईका ह जीत जाथे अऊ नई परय त हार जाथे |

13.भौंरा (लट्टू)

ए खेल म लकड़ी के सुग्घर अऊ चोखी,भौंरा बनाया रथे, संग म पतली अऊ लम्बा डोरी घलो रईथे | भौंरा म डोरी ल बरोबर कई पुरुत के लपेटे रईथे |

अऊ घुमा के भुंईया म छोड़ देथे, भौंरा ह रेस मारके किंदरत रईथे |दूसर संगी घलो मन अपन भौंरा ल चलाथे, चलते चलत जेकर भौंरा ह दूसर के ल गिरा देथे , ओहा जीत जाथे |

14. कितकिता (बिल्लस)

कितकिता खेल ल अंगना म पथरा बिछे रईथे
तेमा नईतो भुईयां म चाक से चरकोनिया खाना

बनाके खेलथे | एमा पांच नहितो दस ठन खाना बने रईथे | तेमा पथरा, खपरैला के तुकड़ा (मिड्डा) ल एक गोड़ म सरकावत जाथे | एक गोड़ ल पीछू कोती ऊपर टांगे रथे अऊ कितकित, कितकित कहत रथे, अगर साहस ह टूट जाथे या फिर मिड्डा लकीर म पर जाथे त ओहा फऊ हो जाथे |

15. सातुल (पिट्टूल)

सातुल ह अब्बड़ मजेदार खेल आय, एमा एको पैसा खरचा करे बर नई लागय | चिथरा

फटहा ओनहा ल लपेट -लपेट के गेंद असन गोलवा गठरी बना लेथे | सात ठन चेपटा-चेपटा पथरा के तुकड़ा लानथे, तरी के बड़े, फेर ओकर ले थोरकन छोटे, फेर ओकर ले छोटे...., असने करके गांजे रईथे | दू ठन टीम बनाय रथे, एक टीम के मन पथरा गांजत रथे, अऊ दूसर टीम के मन, गेंद म फेंक –फेंक के मारत रथे | टीम के संगी मन गेंद के मारई ल रोकत रथे, जब पथरा ह गंजा जाथे तब जोर से सातुल कईथे |

16. नदी पहाड़

नदी पहाड़ के खेल ल , अंजोरी रात म खेले ल अब्बड़ मजा आथे| फेर लईका मन तो कतको बखत खेलत रथे | ए खेल म चौरा, पथरा अऊ ऊंचा जगह मन ल पहाड़ माने जाथे अऊ भुंईया ल नदी | जेकर माथ रईथे तेन ह नदी म रईथे, अऊ आने संगी मन पहाड़ म रथे | जेकर माथ रईथे ओला लईका मन नदी म उतरके तमकावत रथे, अऊ गाना गावत रथे, " काकर नदी के दूध भात ल खाथन जी, काकर नदी के दूधभात ल खाथन

जी" "तोर नदी म डूबक डैय्या,छू ले रे मोर छोटू भैय्या " | ओहा छूए बर दौड़ाथे, जेन ल छू लेथे तेकर माथ हो जाथे |

17.डंडा पचरंगा

गाँव म लईका मन मैदान, गली खोल म ए खेल ल खेलथे | तीन से लेके आठ, दस झन लईका जुर् मिल के खेलथें | सब लईका मन पारी के पारी कोंघर के अपन दूनों गोड़ ल फैला के नीचे ले कस के डंडा ल फेंकत जाथे |

जेकर डंडा ह थोरहे धूरिहा जाथे ओकरे दाम होथे | दाम देवईया लईका ह अपन दूनों हाथ म डंडा ल ऊपर टांग के धरे रईथे अऊ पीछू कोती ल आने लईका मन अपन डंडा से, ओला फेंक- फेंक के दूरिहा लेगत जाथे, खेला के शुरू म ए तय होय रथे की डंडा फेंकें के बाद झट ले, अपन डंडा ल लकरी, पथरा, नीतो बनकचरा म छूवाना रईथे | अऊ नी छूए रहय तेन लईका ल, दाम देवत रथे तेहा छूवे के कोशिश करथे | अगर छू लेथे त नवा दाम हो जाथे | अऊ डंडा ह जतका दूरिहा जाय रथे ऊंहा ले मुड़ी म बोहे -बोहे शुरू करे रथे ऊंहा तक लाना परथे |

18. टोपा बंधऊल

ए खेला म कई झन लईका मन खेल सकत रईथे | पहिली सब लईका मन गोल खड़े होके अपन- अपन एक -एक हाथ से अट्टीपट्टी करथे, फेर जेकर दाम होथे जेकर आंखी म कपड़ा के टोपा बांध देथें | सब संगी मन टोपा बंधाय रथे तेला धीरे कन चिमट के नहितो मारके एती - ओती भागत रईथे | दाम देवईया ह ओमन ल छुए के कोशिश करथे, अगर छूवऊल पा जाथे त ओकर दाम हो जाथे |

19.तीड़ीपासा

मंझनिया के बेरा एक जगा बईठे-बईठे टईमपास करे के अब्बड़ बढ़िया खेल आय | नोनीपिला

,बाबूपिला, छोटे- बड़े सबो एला खेलथे |ए खेल म चार झन संगी रईथे |

जमीन म एक जगा चाक नहितो, रंग रोगन से एक ठन चरकोनिया डब्बा बनाथे , ओकर भीतर म एक बरोबर अकार के पच्चीस ठन छोटे- छोटे डब्बा बनाथे | चारो संगी मन चारो मुड़ा म बईठ जाथे | चाले के लिए चिचोला के पांच ठन बीज ल दूदीफाली करेके पासा बनाय रथे(ए पासा ल लकरी, सुतई , कौड़ी घलो के बन जाथे) अऊ अलग- अलग परकार के चार-चार गोटी रखे रईथे | छोटे- छोटे गोटी, दार, चना, बंबरी बीज कुछु हो सकत हे | एक झन ह पासा ल घुमा के नीचे फेंकथे, अऊ जतका परथे ओतके

घर अपन एक गोटी ल रेंगाथे | असने पारी के पारी सबो संगी चालत जाथे, अऊ जेकर सब गोटी ह डूब जाथे तेहा जीत जाथे|जेकर आखरी तक नी डूबे रहय ओहा हार जाथे |आजकल के लूडो ह निमगा एकरेच असन खेल आय|मैं तो कइथव इही ल देखके लूडो ल बनाय हवय ए खेला से लईका मन ल गिनती पहाड़ा अऊ जोड़े- घटाय के जानकारी मिलथे|

20. रेसटीप

संगी जेला आजकल हमन लुका-छुपी कईथन न ओईहा ,तईहा के रेसटीप आय | नान्हे संगी हो,ए खेल ल बहुत झन संगवारी जुरमिल के खेलथे | एक झन संगी के दाम

रईथे , अऊ बांकी सब झन एती-ओती कोंटा बिरकोनिया म लुकाय रथे | दाम देवईया ह खोजत-खोजत आथे, अऊ जेन लईका ह पहिली दिख जाथे ओला पहिली टीप, दूसरा दिखथे तेला दूसराटीप,तीसरा ल तीसराटीप, असने करत सब झन ल गिनत जाथे | ओई बीच म अगर कोनो संगी पीछू से आके रेस कईके छू देथे त फिर से ओकरेच दाम हो जाथे | अऊ अगर कोई रेस नई करय त पहिली टीप वाला संगी के दाम हो जाथे |

21.रंग- बिरंगा

रंग बिरंगा के खेल म आठ दस कतको झन लईका मन खेल सकत रईथे | एक लईका के दाम रईथे, तेन लईका ह जोर से कईथे – "रंग बिरंगा,
तब अऊ लईका मन कईथे – "कोन सा रंगा"

तब अपन पसंद के कोई भी रंग कईथे "नीला रंग"त सब झन ल ओई रंग ल छूना रईथे, अऊ जेन लईका ह रंग ल खोज के छूए नई सकय | ओकर दाम हो जाथे |

22.घोर-घोर रानी

घोर – घोर रानी म, लईका मन एक दूसर के हाथ ल धरके गोल खड़े हो जाथे, एक झन सबले छोटे लईका ल बीच म खड़े कर देथे | सब झन गोल गोल गोल गाना गा गा के किंदरत जाथे-

"घोर- घोर रानी, अतका- अपना"
"घोर -घोर रानी, घुठूवा भर पानी "
"घोर- घोर रानी ,माड़ी भर पानी"
"घोर- घोर रानी, कनिहा भर पानी "
"घोर- घोर रानी, कोहनी भर पानी "
"घोर- घोर रानी, छाती भर पानी"
"घोर- घोर रानी, घेंच भर पानी "

बीच म जे लईका ह संगे- संग किंदरत रईथे, ओहा बाहर जाय के रस्ता खोजत रथे | ए डहर ले जाहूँ, तारा कुची लगाहूं | ऐ डहर ले जाहूँ, तारा कुची लगाहूं, असने करके पारी के पारी सब बीच म आके किंदरत जाथे |

23.तोता उड़, मैना उड़

ए खेला ल लईका मन एक जगा बईठ के अराम से खेलत रईथे, एती-ओती भागे दौड़े बर नई

लागय | एमा पांच-सात झन संगी हो जाथे अऊ, अपन हाथ के एक – एक अंगठी ल भुईयां म मढ़ाय रथें | एक संगी जेकर दाम रईथे तेन ह कौवा उड़, मैना उड़, हाथी उड़ कहत रईथे | संगी मन उड़े वाला जीव के नाम लेथे त अपन अंगठी ल उड़ाथे, अऊ नई उड़े सकय जेकर नाम लेथे तो भुईयां से उंगली ल ऊपर नई करय | अऊ जेन संगी ह उल्टा -पुल्टा करथे, ओकर दाम हो जाथे |

24.दस्सो- पिंजो

दस्सो- पिंजो के खेल म पांच झन खेलईया रईथे, सब संगवारी मन अपन- अपन नाम रखे रईथे | मैं दस्सा, मैं पंजा, ऐसे करके, दस्सा के एक उंगली, पिंजो के दो, काल के तीन,

कबूतर के चार, अऊ ढोल के पांच उंगली रईथे | जेकर माथ रथे तेहा कहत जाथे_ दस्सा, पिंजो, काल, कबूतर, ढोल | तब संगी मन अपन मर्जी से कतको उंगली ल भुईयां म मढ़ाय रथे , दस्सा ,पिंजो, काल, कबूतर, ढोल कहत जाथे, अऊर जेकर म जाके ढोल आथे तेला गदा गदऊल मारथे, जभे ओहा हरदी गईठ कईथे तभे छोड़थे | दूसर तरीका म आमने- सामने बईठ के चित्र म बताय हवय तसना घलो मारथे |

25. कुढ़ील

कुढ़ील खेल म दु ले चार संगी खेल सकथे, खेलत रथे तेन संगी मन अलग-अलग डहर म चल देथे | सब संगी चाक्, बत्ती या फेर कोयला धरे रथे, अऊ पथरा, खपरा, दीवार, भुईयां कोनो जगा, कई जगा मन म लुकाछिपा के छोटे-छोटे बहुत सारा लकीर खींचे रईथे |

एक घंटा या आधा घंटा के समय रखे रईथे फेर सब कोई एक जगा कुढ़ील होगे कईके जुर जाथे, अऊ अपन टईम पूरा होथे त सब कोई आथे |अऊ पारी के पारी ओकर पारे कुढ़ील ल खोजथे | खोजे ले पहिली बरा खाबे धन दूबी कईके सवाल पूंछथे जवाब में बरा कईथे त बारह जगा अऊ दूबी कही त दु जगा ल खोजना रईथे | संगी मन पात जाथे तेला काटते जाथे

|ओकर बाद कुढ़ील बाहच जाथे त जतका बाहचे रईथे ओला गिनके, खोजने वाला मन ल कुढ़ील वाला लईका ह मुटका मारथे | असने पारी के पारी सब कोई के ल खोज- खोजके गिनती करथे, अऊ मारत जाथे |

26.आम्बे-बाम्बे

आम्बे- बाम्बे खेला म दु झन से लेके दस, बारा लईका मन खेल सकत रईथे | एक संगी के दाम रथे,तेन ह दीवार कोती मुंह करके खड़े हो जाथे अऊ बांकी संगी मन ओकर पीछू कोती | दाम देवईया संगी ह, आम्बे- बाम्बे सिटी बाम्बे स्टाप कथे त चलथें अऊ स्टाप कईथे त जसने रईथे ओसने हालत म स्टाप (रुक)हो जाथे | अऊ नई रूके रहय,अऊ दाम देवईया लईका ह ओला हालत डोलत देख डारथे त ओकर दाम हो जाथे |

27. चुरी जीत

चुरी जीत ल तीन चार झन लईका मन कांच के रंगीन अऊ छोटे- छोटे चुरी मन ल बिन-बिन के बहुत अकन सकेले रईथे | एक जगह बईठ जाथें अऊ हथेली म धरके ऊपर हथेरी म पलटथे ,आने संगी मन कोई एक चुरी ल छांटके गिरने नई देना ए कहथे,अऊ नई गिरय त ओतका चुरी ल जीत जाथे अगर गिर जाथे त ओतका ल हार जाथे|

28. चुरमुंदरी

चुरमुंदरी खेल म लईका मन अंगना, परछी , चौरा म गोल बनाके मड़िया के बईठ जाथे , अऊर अपन माड़ी म दूनो हाथ ल एक के ऊपर एक करके बईठ जाथे |एक संगी ह ओमन से दूर म पीछू करके खड़े

रईथे | एती एक झन ह अपन हाथ म गोंटी रखे रईथे तेला सबो लईका मन के हाथ म रखे के नाटक करथे,अऊ कोई भी एक लईका के हाथ म छोड़ देथे| फिर बाहर खड़े संगी ल, आ जा कहके बुलाय जाथे|ओहा अंताज के बताथे कि गोंटी ह काकर हाथ म हवय | जान डारथे त जेकर म गोंटी रथे तेन ह बाहर जाथे, अऊ ओकर जगह म ओहा बईठ जाथे |

29. चालगोटी (कसाड़ी)

चालगोटी खेले के लिए लकड़ी या फेर माटी के कसाड़ी बनाय रथे, जेमा दूनो तरफ छै- छै घर

यानेकी बारह घर अऊ दू ठन ढाबा बने रईथे| ओमा चाले बर तेंदूबीज नहितो चिचोला (अमली बीज) रखे रईथे|बारह बीज के एक पुक बनाय रथे|मतलब बारह पुक बीज के जरूरत रईथे|हर घर म बारह- बारह बीज भरके राखे रईथे| चाले के बेरा कोई भी एक घर के बीज मन ल धरके सब म एकक बीज डारत जाथे| एक घर के पहिली बीज ह सिरा जाथे तेहा आगे के घर के पुक ल जीत जाथे|अऊ अगर ढाबा के तीर म बीज सिरा जाथे त भटक जाथे, फेर आने संगी ह चालथे|

30. दही मही

दही मही लेला ओ, ए खेला म बहुत झन लईका मन गोला बनाके बईठे रथे, पीछे घुमके देखना नई रहय| एक लईका ,जेकर दाम रथे तेन ह एक ठन गमछा ल मुरकेट के धरे रईथे | अऊ सब बईठे रईथे तेमन के चारों मुड़ा म किंदर- किंदर के आवाज लगा लगाके दही मही बेंचें के नाटक करथे | "दही मही लेला ओ, का दही ओ " भैंसी के दूध " उत्तर म आने बच्चा मन बोलथे_ मईच ह खाहा, मईच ह पिहां ।

बच्चा के पीछू म रख देथे, एक बार घूमे के बाद घलो नई देखे पाय रहय त ओ गमछा ल उठा के ओई मेरा बईठे रथे तेला दौड़ा-दौड़ा के मारथे |

ए सब खेला मन के अलावा अऊ कई ठन खेला हावय जैसे- खिलामार, उड़ानबांटी, फोदा, चोर-पुलिस, तीनखत्ती,डंडा-कुलकुल अऊ कतेक घलो होही|

संगी होवा, हमर छत्तीसगढ़ म अलग- अलग जिला म दस- बीस कोस के दूरिहा म भाखा अऊ खेलकूद घलो म थोर- थोरकन के बदलाव आवत रईथे, तेकर कारन हो सकत हे|कई ठन खेला के नाम अऊ नियम, तरीका ह कोनों- कोनों जगा म अलग घलो हो सकत हे|

आप मन के संगवारी

सुरेखा नवरत्न सहा. शिक्षक

कार्यस्थल - शा. प्रा. शाला – छिर्रा

विकास खंड- बिलाईगढ़

जिला- बलौदाबाजार (छ.ग.)

गृह जिला- जांजगीर- चांपा

मो.नं. 7611172332.